ALL RIGHTS RESERVED

BPSCM/BN/ES/15-2023

Test Code: BPSES0523

BPSC

68th BPSC Mains Test Series 2023

विषय:

Essay- 3

निबंध / Essay

Online / Offline

Time Alloewd: 3 hours
समय : 3 घण्टे

Date: 15.04.2023

Maximum Marks: 300
पूर्णांक: 300

निबंध

68th & 69th BPSC MAINS

विषय :

1. जल संरक्षण
2. अहिंसा

1. जल संरक्षण

प्रस्तावना

आज पूरे भारत में पानी की कमी पिछले 30–40 साल की तुलना में तीन गुणा हो गयी है । देश की कई छोटी–छोटी नदियां सुख गयी हैं या सूखने की कगार पर हैं । बड़ी–बड़ी नदियों में पानी का प्रवाह धीमा होता जा रहा है । कुएं सूखते जा रहे हैं । 1960 में हमारे देश में 10 लाख कुएं थे, लेकिन आज इनकी संख्या 2 करोड़ 60 लाख से 3 करोड़ के बीच है । हमारे देश के 55 से 60 फीसदी लोगों को पानी की आवश्यकता की पूर्ति भूजल द्वारा होती है, लेकिन अब भूजल की उपलब्धता को लेकर भारी कमी महसूस की जा रही है । पूरे देश में भूजल का स्तर प्रत्येक साल औसतन एक मीटर नीचे सरकता जा रहा है । नीचे सरकता भूजल का स्तर देश के लिए गंभीर चुनौती है ।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आजादी के बाद कृषि उत्पादन बढ़ाने में भूजल की महत्वपूर्ण भूमिका थी । इससे हमारे अनाज उत्पादन की क्षमता 50 सालों में लगातार बढ़ती गयी, लेकिन आज अनाज उत्पादन की क्षमता में लगातार कमी आती जा रही । इसकी मुख्य वजह है कि बिना सोचे–समझे भूजल का अंधाधुंध दोहन । कई जगहों पर भूजल का इस कदर दोहन किया गया कि वहां आर्सेनिक और नमक तक निकल आया है पंजाब के कई इलाकों में भूजल और कूएं पूरी तरह सूख चुके हैं । 50 फीसदी परंपरागत कुएं और कई लाख टयूबवेल सुख चुके हैं । गुजरात में प्रत्येक वर्ष भूजल का स्तर 5 से 10 मीटर नीचे खिसक रहा है । तमिलनाडु में यह औसत 6 मीटर है ।

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna- 800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

यह समस्या आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार में भी है । सरकार इन समस्याओं का समाधान नदियों को जोड़कर निकालना चाहती है । इस परियोजना के तहत गंगा और ब्रह्मपुत्र के अलावा उत्तर भारत की 14 और अन्य नदियों के बहाव को जोड़कर पानी को दक्षिण भारत तक पहुंचाया जायेगा, क्योंकि दक्षिण भारत की कई नदियां सूखती जा रही है । इन सभी समस्याओं के निदान के लिए भारत में जल संरक्षण करना बहुत जरुरी है और ये प्रत्येक भारतीय को जिम्मेदारी भी हैं की वे अपने- अपने स्तर से जल संरक्षण करें।
धरती पर समस्त जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए हवा, पानी और भोजन बहुत ही जरूरी है। जिसमें से जल प्रकृति की अनमोल धरोहर है बिना जल के इस धरती पर जीवन का होना संभव नहीं है। जल की एक–एक बूँद सभी के लिए बहुत ही कीमती है।

धरती पर वैसे तो जल का भंडारण बहुत ही अधिक है अगर हम जल की बात करें तो पूरी पृथ्वी का 70% भाग जल से भरा हुआ है पर इस 70% भाग में से केवल 1% भाग सभी के लिए उपयोगी है और इस 1% भाग में से केवल 1% भाग पीने के योग्य है। इसीलिए सभी को बहुत ही सोच समझ के साथ जल का सीमित उपयोग करना चाहिए और जल संरक्षण में अधिक से अधिक अपनी भूमिका को निभाना चाहिए।

जल संरक्षण, पानी के उपयोग उपयोगिता को सीमित करना एवं सही तरीके से पानी का संरक्षण करना है। आज हमारे लिए जल संरक्षण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया हैं। शद्ध जल एक सीमित संसाधन है जिसके लिए जल संरक्षण अति आवश्यक है।

जल स्थानीय उपयोग से लेकर कृषि एवं उद्योग तक एक मूलभूत आवश्यक अंग है जिसके द्वारा यह सभी कार्य सफलतापूर्वक किए जाते हैं। अतः इस प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण करना हमारे लिए अति आवश्यक है।

मानव आबादी बढ़ने के कारण पृथ्वी के जल पर एक गहरा प्रभाव पड़ा है जिससे अधिक मात्रा में जल दूषित हो जाता है जो पीने योग्य नहीं रहता है नदी तालाब झील जलाशय एवं भूजल के जल के दुरुपयोग के कारण आज हमें भीषण जल संकट का सामना करना पड़ रहा है और शायद आने वाले समय मे यह संकट और भी बढ़ जाये।

आबादी और उद्योग की वृद्धि के कारण ताजे जल स्रोतों की आवश्यकता है और बढ़ रही हैं लेकिन हमारे पास जल का सीमित संग्रह बचा है। ऐसी हालात में जल संरक्षण ही एकमात्र उपाय है जो हमें और हमारे आने वाली पीढ़ी को इस संकट से बचा सकता है।
जल संरक्षण में असफल होने से जल की पर्याप्त आपूर्ति में कमी हो सकती है, जिसके कठोर परिणाम हो सकते हैं। इसमें पानी की लागत बढ़ना कम खाद्य आपूर्ति एवं स्वास्थ्य संबंधी खतरे और राजनीतिक संघर्ष शामिल है।

जल की कमी के कारण पर्यावरण का संतुलन, भी बिगड़गा एवं वन उपवन और वन्य जीव पर संकट आ सकता है। जल पूरे सृष्टि जगत के लिए आवश्यक है और धरती पर इसका सीमित स्रोत हमें इस बात की ओर इंगित करता है कि कि हम जल संरक्षण की ओर ध्यान दें हमारी आने वाली पीढ़ी को एक–एक बूंद जल के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।

जल संकट के आवश्यक घटक :

जल संकट का कारण बढ़ती जनसंख्या एवं अशिक्षित समाज है। बढ़ती जनसंख्या के कारण वनों की कटाई जोकि जल संकट (सूखा) का एक विशेष कारण है, पेड़ों से पानी के स्रोत पृथ्वी में ज्यादा नीचे तक नहीं जा पाते हैं जिससे जल आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

वनों की कटाई के कारण वहां की जमीन बंजर हो जाती है जिससे वह कृषि उपयोगी भी नहीं रहती है, इसलिए जल संरक्षण के लिए पेड़ों का लगाया जाना अति आवश्यक है। तथा जल स्रोतों का रक्षा करना जल संकट से बचने का एकमात्र उपाय है अतः हमें नदी तालाब झोल सरोवर आदि के जल को स्वच्छ रखना चाहिए जिससे हमें जल संकट का सामना न करना पड़े।

आधुनिक युग में जल संकट का जिम्मेदार कल कारखाने भी हैं जो अपने कारखाने में उपयोग होने वाले जल को दूषित करने के पश्चात नदियों के स्वच्छ जल में छोड़कर उसे भी प्रदूषित कर देते हैं जिससे स्वच्छ जल हमारे उपयोग में नहीं रह जाता है। अतः कल कारखानों को अपनी दूसरी जनों का संचय करना चाहिए एवं उन्हें दूषित रहित करके ही छोड़ना चाहिए।

जल संरक्षण अधिनियम :

जल प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण के लिए जल संरक्षण अधिनियम 1974 के अंतर्गत गठित केंद्रीय जल प्रदूषण नियंत्रण कमेटी द्वारा समय–समय पर नदी एवं जलाशयों के प्रदूषण का सर्वेक्षण करना, औद्योगिक बहाव की निगरानी करना, प्रदूषित जल के उपचार की सस्ती विधियों का विकास करना, स्थानी जागृत करना आदि को अमल में लाया जाए एवं नियम कानून और सख्त किए जाए जिनका अनुपालन सभी के लिए अनुकरणीय हो। नहीं तो ऐसी स्थिति में कड़े दंड दिए जाने एवं कठोर कानून कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित हो तभी जल प्रदूषण पर लगाम एवं जल संरक्षण को विकसित किया जा सकता है।

जल संरक्षण के उपाय :

ऐसे बहुत से उपाय है जिससे हम जल संरक्षण कर सकते हैं यदि हम जल का सीमित उपयोग करें और उसे बचाने के लिए उचित कदम उठाए तो जल का सीमित भंडार अधिक समय तक बना रह सकता है।

वर्षा के जल का संग्रह करें :

वर्षा के जल का संग्रह न करना हमारी सबसे बड़ी भूल है। वर्षा का जल सबसे शुद्ध होता है फिर भी आज कल वर्षा का जल संचित ना करके वह नदियों गजरो तालाबों आदि में बह जाता है जिससे बहुत बड़ा नुकसान होता है क्योंकि एक दूषित जल को शुद्ध करने में अधिक मात्रा में खर्च आता है अतः प्राकृतिक रूप से मिला हुआ शुद्ध जल हम बर्बाद कर देते हैं।

वर्षा जल का अगर हमें संरक्षण करें तो हम वर्ष में होने वाली जल की कमी को पूर्ण कर सकते हैं। वर्षा के जल को हम नदी तालाब जलाशय झील एवं छोटे–छोटे गड्ढों का निर्माण करके उसमें वर्षा के जल का संचय करके हम जल संरक्षण का कार्य कर सकते हैं। इसे संग्रहित जल का उपयोग हम सिंचाई कारखाने में होने वाली धुलाई एवं अन्य उपयोगों में ला सकते हैं जिससे हम भूमिगत जल की भी बचत करते हैं। हम गांव एवं शहर के बाहर तालाब बनाकर जल संरक्षण का कार्य कर सकते हैं जिससे जल संकट वाले क्षेत्र में जल पहुंचा कर राहत का कार्य कर सकते हैं।

भूगर्भ जल का रक्षण :

भूगर्भ जल अर्थात जमीन के अंदर के जल को हम हैंड पंप आदि से निकालते हैं। अधिक भूगर्भ जल निकालने के कारण तथा उसका दुरुपयोग करने के कारण भूगर्भ के जल में कमी आती है। हमें भूगर्भ जल का रक्षण करना चाहिए। तालाब, सरोवर ,झील आदि से भूगर्भ जल का स्तर बढ़ता है। भूमि प्रदूषण को रोकने की भी आवश्यकता है जिसके कारण भूगर्भ जल भी प्रदूषित हो रहा है।

जल संरक्षण की उपयोगिताः

संरक्षित जल का हमारे जीवन में जल संकट से निकलने का एकमात्र उपाय है। हमें वर्षा के शुद्ध जल का संचय करना होगा जिसके लिए हमें छोटे छोटे तालाब का निर्माण करना होगा जिसमें वर्षा के जल का संचय हो सके।

1. घरेलू उपयोग मेंः

नहाने में बर्तन धोने में वाहन धोने में तथा हम अपने घर की साफ सफाई में इन संरक्षित जलों का उपयोग कर सकते है।

जिससे हम शुद्ध जल की बर्बादी को कम कर सकते हैं। यदि हम अपनी जवाबदारी को समझकर जल का सही उपयोग करें तो जल संरक्षण में अपनी भागीदारी दे सकते हैं।

2. कृषि कार्य में उपयोगः

वर्षा का जल बहुत उपयोगी होता है जो सिचाई के कार्य में आ सकता है। वर्षा के जल में अम्ल की मात्रा बहुत कम होती है जो भूमि के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। वर्षा के जल से सिंचाई करने पर भूमि की गुणवत्ता बढ़ जाती है जिससे फसलों की पैदावार अच्छी होती है।

3. करखानो में उपयोग :

कारखानों में जल संरक्षण के द्वारा प्राप्त किया हुआ जल का उपयोग करना चाहिए जिससे शुद्ध जल की बचत हो सकती है और कारखानों में अधिक मात्रा में जल का उपयोग होता है इसलिए जल संरक्षण आवश्यक है

उप संहार

जल संरक्षण के महत्व को हमें इस बात से समझ लेना चाहिए कि हमारी धरती पर स्वच्छ जल 1% बचा है। यदि हम इसी प्रकार जल का दुरुपयोग करते रहे तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की स्वत समाप्त हो जाएंगे। अतः जागरूक होने की आवश्यकता है और अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाते हुए सभी देशों को जल संरक्षण पर गंभीरता से प्रयास करना चाहिए।

2. अहिंसा

प्रस्तावना

मनु ने हिन्दू धर्म के दस लक्षणों में अहिंसा को सबसे पहला स्थान दिया है–

"अहिंसा सत्यमस्तेयं सौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीविद्या सत्ममक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम॥"

सामान्य अर्थ में 'हिंसा नहीं करना' ही अहिंसा है। धर्म ग्रन्थों के अनुसार व्यापक अर्थ में इसका मतलब 'किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन व वाणी से कोई नुकसान नहीं पहुँचाना ही 'अहिंसा' है। 'जैन' एवं 'हिन्दू धर्म में अहिंसा को बहुत महत्त्व दिया गया है। जैन धर्म का तो मूल मंत्र ही 'अहिंसा परमो धर्मः' अर्थात अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है। इसके अलावा विश्व में भी अहिंसा का विचार रहा है। थोरो, टॉलस्टॉय, लाओत्से, कन्फ्यूशियस जैसे अहिंसावादी विचारक वैश्विक स्तर पर रहे है। आधुनिक भारत में महात्मा गांधी का नाम इसमें सबसे ऊपर आता है। ब्रिटिश शासकों से भारत को आजाद करवाने में गांधी ने इसे सबसे प्रभावी हथियार बना दिया।

जीवन 'अहिंसा' से ही चलता है। अगर अहिंसा न हो तो मनुष्य हिंसक पशुओं की तरह लड़कर खत्म हो जाएगा। अहिंसा मनुष्य का स्वभाव है। हिंसा उसके स्वभाव में आयी

विकृति या बीमारी है। मनुष्य समाज ने अगर विकास किया है तो अहिंसा के माध्यम से। आपस में हिलमिलकर सदियों से रहना 'अहिंसा' से ही संभव हो पाया है। अगर प्रत्येक मनुष्य 'अहिंसा' को मजबूती से अपने जीवन का अंग बना ले तो दुनिया में अपराध, नफरत, स्वार्थ, हिंसा, चोरी जैसी घटनाएं पूर्णतः खत्म हो जाएगी। मनुष्य प्रकृति से उतना ही लेगा जितनी उसको जरूरत है। प्रकृति का अत्यधिक दोहन करना, उससे जरूरत से ज्यादा लेना भी हिंसा है।

अगर हम ऐसा करेंगे तो आनेवाली पीढ़ियों के लिए कुछ भी नहीं बचेगा। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग जरूरत के अनुसार करना चाहिए। दुनिया की किसी भी समस्या का समाधान हिंसा से नहीं हो सकता। हिंसा हमेशा प्रतिहिंसा को जन्म देती है। यह कभी नहीं रुकनेवाला अंतहीन सिलसिला है। इसलिए सभी समस्याओं का समाधान बातचीत से, प्रेम और सौहार्द से ही हो सकता है। हम एक हिंसक समाज का निर्माण नहीं कर सकते। आँख के बदले आँख के सिद्धांत पर चले तो पूरी दुनिया ही अंधी हो जाएगी।

बौद्ध और जैन धर्मो का तो उदय ही अहिंसा से हुआ है। किसी से वैर न करना यानी सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करना– यही अहिंसा है।

"न छीनिए जीवन प्राणवान का,
न दे सकोगे नव प्राण जीव को॥

पर अहिंसा का केवल यह अर्थ नहीं है कि हम किसी का बुरा नहीं और बुरा नहीं करेंगे। बल्कि अहिंसा का अर्थ है हर किसी का भला सोचेंगे और भला करेंगे। गांधीजी और अहिंसा पर्याय (एकार्थी) हैं। गांधोजी के शब्दों में देखेंगे कि अहिंसा क्या है– "अहिंसा का अर्थ है ईश्वर पर भरोसा रखना"। अहिंसा परमेश्वर के दर्शन करने का सीधा और छोटा सा मार्ग है। "अहिंसा परमो धर्म" – अहिंसा ही धर्म है, वही जीवन का एक रास्ता है। अहिंसा सत्य का प्राण है। उसके बिना मनुष्य पशु है। अहिंसा की शक्ति अमाप है। अहिंसा का मार्ग तलवार की धार पर चलनेवाला है। घोर अन्याय करनेवाले पर भी गुस्सा न करें, उससे प्रेम करें और उसका भला चाहें।

अहिंसा प्रचण्ड अस्य है। उसमें परम पुरुषार्थ है। वह वीर पुरुष की शोभा है, उसका सर्वस्व है। वह शुष्क, नीरस जड़ पदार्थ नहीं है। वह चेतन है, वह आत्मा का विशेष गुण है।

वर्तमान समय में अहिंसा की आवश्यकता :

आज संसार में सब कहीं युद्ध, आग जनी, आतंक आदि फैला हुआ है। किसी भी देश में चैन नहीं है। सारा विश्व अनेकों समस्याओं में उलझा हुआ है। ऐसा वातावरण बना हुआ है कि मनुष्य समझ नहीं पाता कि वह क्या करे, कैसे करे? विश्व के कोने–कोने में अशांति फैली है। जगह–जगह हड़तालें हो रही हैं, लोगों का अपहरण हो रहा है। समाचार पत्र हिंसापूर्ण समाचारों से ही भरे रहते हैं। इन सब का एक ही कारण है हर व्यक्ति का स्वार्थ। स्वार्थ मार्ग हिंसा का मार्ग है, अशांति का मार्ग है। सब समस्याओं का हल एक मात्र अहिंसा ही है। ऐसे मौके पर गांधीजी का अहिंसा–मार्ग ही विश्व–कल्याण का मार्ग है।

गांधीजी की अहिंसा के अनुसार सारा संसार एक परिवार है। जिस तरह मनुष्य अपने परिवार के सदस्यों से प्रेम करता है उसी तरह विश्व के हर व्यक्ति को ईश्वर की संतान मानता है और सबको विश्व–रूपी परिवार का सदस्य मानता है और सबसे प्रेम करता है। यही "वसुधैव कुटुंबकम्" है। इस बात को तुलसीदासजी पहले ही कह चुके थे ।

"सिया राम मय सब जग जानी, करुॐ प्रनाम जोरि जुग पानी।"
"जड चेतन जग जीव जे, सकल राममय जानो।"

©BNPH||Bihar Naman GS, 3rd Floor, A.K. Pandey Building, Road No.- 2, Rajendra Nagar, Patna- 800016, Mob.- 8368040065. www.biharnaman.in, Telegram - https://t.me/biharnaman

तभी हमारी समस्याएँ दूर हो सकती हैं और सब आपस में प्रेम करने लगेंगे।

अहिंसा से ही सच्ची शांति :

हिंसा से कोई भी समस्या सुलझ नहीं सकती। उससे बदले की भावना ही भड़कती है। संसार में खून की नदियाँ बहती हैं और अशांति फैलती है। इसलिए अहिंसा से ही अशांति दूर हो सकती है और सच्ची शांति कायम हो सकती है।

हिंसा के भयंकर परिणाम :

हिंसा के मार्ग पर चलनेवालों को बहत बरा फल भोगना पड़ता है। यह हिंसा पिशाचिनी है। इसके कारण दो विश्व युद्ध हो चुके हैं। उन युद्धों के कारण न जाने कितनी अबलाओं, माँ–बहनों की माँगें पछ गईं– न जाने कितने बच्चों की जानें गईं। शायद हिंसा का वर्णन करने में लेखनी को भी ग्लानि का अनुभव हो। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिंसा से वास्तविक शांति न कभी कायम हुई और न होगी। विजय के घमंड में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया, रक्त की नदियाँ बहाईं। उसकी जीत हुई। परन्तु इतने मनुष्यों की हत्या और रक्त–पात को देखकर उसकी आत्मा छटपटा गई। उसने प्रतिज्ञा की कि आज से मैं तलवार से नहीं, प्रेम से लोगों के हृदय पर विजय पाऊँगा। परिणाम यह हुआ कि प्रजा भी उसको प्यार करने लगी। पर सब के सब योद्धा अशोक तो नहीं हो सकते । संसार में एक ही तो अशोक हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि हिंसा भले ही खून बहाने में समर्थ हो, पर मनुष्य की सुख–समृद्धि कभी नहीं हो सकती। और बीसवीं शताब्दि में गांधीजी ने बिना लड़ाई किये अहिंसा के बल पर लोगों के हृदय को जीत लिया।

उपसंहार

अहिंसा कायरों का हथियार नहीं है, बल्कि बलवानों का हथियारहै। बल का मतलब शारीरिक बल से नहीं है, बल्कि आत्मबल से है। द्य जिसमें आत्मबल है, वही इसका प्रयोग कर सकता है और सफलता पा सकता है। परन्तु इसमें प्राण त्यागने के लिए तैयार होना चाहिए।